गति न्यारी। मूरख मूरख राजा कीन्हे। पंडित फिरत भिखारी।" हे उधो कर्मों की गति न्यारी है, उसके कारण दुनिया में अजीब तमाशा दीखता है। जो मूरख हैं, उनको चुन-चुनकर राजा बनाया है और पंडित भिखारी बनकर आठ साल से घूम रहा है!

इस तालीम को दफनाइये

मैं चाहता ही नहीं कि मेरा किसीपर दबाव पड़े। इसलिए मुझे समझने में ही खुशी मालूम होती है। लेकिन जमाने की माँग है कि आज जो तालीम चल रही है, उसे जल्द से जल्द दफनाया जाय। दो तरह से दफनाया जाता है। पिताजी की लाश को इज्जत के साथ दफनाया जाता है। लेकिन यह हमारी तालीम इज्जत के साथ दफनाने लायक है ही नहीं। यह बुरी चीज है, जो हिंदुस्तान के जिगर को खा रही है। लोगों का पराक्रम खत्म कर रही है। इसलिए उसे तो दूसरे तरीके से ही दफनाया जाना चाहिए।

आप बच्चों को इतनी बेकार तालीम देते हैं और कहते हैं कि बच्चों में अनुशासन नहीं है। मुझे तो ताज्जुब होता है कि बच्चे इतने भी अनुशासित कैसे हैं! मैं तो अनुशासन में नहीं रहता था। प्रोफेसर कोई लेक्चर, तकरीर करें और मैं सुनता रहूँ, यह कभी नहीं हो सकता था। मैं तो घूमने चला जाता था। अगर उनका सारा इल्म मैंने लिया होता तो आज मैं कहाँ होता? कहीं नौकरी करता और पेन्शन लेकर बैठा रहता।

सर्वोदय के बुनियादी उसूल

सर्वोदय के बुनियादी उसूल इस प्रकार हैं:

(१) तालीम लोगों के हाथ में होनी चाहिए।

(२) तालीम का जरिया मादरी जबान ही होना चाहिए।

(३) उसके साथ-साथ दूसरी जबानें भी सिखा दी जायँ, लेकिन लादी न जायँ।

(४) तालीम में अखलाकी, रूहानी चीज जरूर होनी चाहिए।

(५) तालीम में कोई न कोई दस्तकारी जरूर होनी चाहिए।

इन पाँच उसूलों को हम कभी नहीं छोड़ सकते हैं। आप इसपर सोचिये। सरकार आपकी बनायी हुई है, इसलिए आप सोचेंगे तो तालीम में जरूर फर्क हो सकता है।

अपने देश की विशेषता

हमें मगरीब (पश्चिम) से बहुत सीखना है, खासकर विज्ञान लेना है। मैं विज्ञान का कायल हूँ। जितना विज्ञान बढ़ेगा, उतनी रूहानियत बढ़ेगी। विज्ञान और रूहानियत के जोड़ से इन्सान इस दुनिया में बहिश्त (स्वर्ग) ला सकेगा। मगरीब ने विज्ञान बहुत विकसित किया है। इसलिए उसे जरूर सीखना चाहिए। लेकिन हमारे देश की अपनी भी कुछ चीजें हैं, जिनमें तालीम एक है। जिस जमाने में यूरोप में तालीम नहीं थी, उस जमाने में हिंदुस्तान में काफी तालीम थी। उपनिषद् में, जो कि चार हजार साल पहले की किताब है, एक राजा अपने राज्य का बयान करता है। "न मे स्तेनो जनपदे। न कदर्यो न मद्यपः, न अविद्वान्।" मेरे राज्य में कोई चोर नहीं है और कोई कंजूस नहीं है। इसमें उसने चोर के साथ कंजूस को जोड़ दिया, क्योंकि कंजूस चोर का बाप है, जो उस बेटे को पैदा करता है। राजा कहता है कि मेरे राज्य में कोई शराब पीनेवाला नहीं है और कोई अविद्वान् नहीं है। याने सिर्फ पढ़ा-लिखा ही नहीं, बल्कि आलिम नहीं, ऐसा शख्स मेरे राज्य में कोई नहीं है। इस तरह चार हजार साल पहले का राजा अपनी हुकूमत का बयान करता है। तालीम अपने देशकी खास अपनी चीज है। जिसमें हमने दस हजार साल का तजुरबा हासिल किया है।

बेतजुरबेकार उस्ताद!

हमने तय किया था कि इन्सान की जिंदगी में तालीम देना हरएक का फर्ज है। बचपन में इन्सान ब्रह्मचर्य की तालीम लेगा। फिर गृहस्थ बनेगा। उसके बाद पुख्ता उम्र आयेगी तो वह वानप्रस्थी बनेगा। कुरान-शरीफ में कहा है कि चालीस साल की उम्र में दिल दुनिया से हटकर परमात्मा की तरफ जाता है, जाना चाहिए। पैगंबर ने अपने तजुरबे से यह बात कही है। चालीस साल के बाद उनका दिल परमात्मा की तरफ गया था। ब्रह्मचारी याने पढ़नेवाला लड़का, गृहस्थ याने दुनिया में काम करनेवाला। तीसरी अवस्था वानप्रस्थ की है, जो तजुरबेकार (अनुभवी) होता है। इसलिए उसका फर्ज है कि वह विद्यार्थियों को पढ़ाये। आज तो यह होता है कि बीस साल का जवान डिग्री हासिल करके टीचर या प्रोफेसर बनता है। बी. काम. पास करनेवाला जवान क्या कॉमर्स (व्यापार) टीचेगा? क्या उसने कभी व्यापार किया था? पाँच हजार रुपये उसे दे दिये जायँ तो वह उसके ५० हजार नहीं बना सकेगा, ५०० ही बनायेगा। उसे कुछ भी तजुरबा नहीं है। उसने सिर्फ किताबें पढ़ी हैं। ऐसे बेतजुरबेकार जवान उस्ताद बनते हैं तो बच्चों को क्या तालीम मिलेगी? यह बी. काम. बेकाम ही होते हैं। उसी तरह 'पॉलिटिक्स' पढ़ानेवाले भी जवान ही होते हैं, जिन्हें कुछ भी तजुरबा नहीं होता। 'पॉलिटिक्स' कौन पढ़ायेगा? पं० नेहरू नाहक प्राइमिनिस्टर बनकर बैठे हैं। वे प्राइमिनिस्टरी छोड़कर उस्ताद बनें तो 'पॉलिटिक्स' अच्छी तरह पढ़ा सकते हैं। यह अपने देश की चीज है कि इन्सान को एक उम्र के बाद उस्ताद बनना चाहिए। आपने तालीम पायी है, इसलिए तालीम देना आपका फर्ज है। अगर मेरा निज़ाम (राज्य) चले तो मैं पं० नेहरू को राजनीति का प्रोफेसर बनाऊँगा और घनश्यामदास बिड़ला को कॉमर्स (व्यापार) का प्रोफेसर।

हम आधुनिक जमाने में हैं, इसलिए लोग सोचते हैं कि हमारे पास कुछ भी नहीं है, सब कुछ मगरीब से ही लेना है। जो उठा सो प्रोवेल, पेस्टोलॉजी और मान्टेसरी की बातें समझाता है। यह बात सही है कि उन्होंने कुछ तजुरबे हासिल किये हैं। लेकिन उन लोगों के पास आत्मा को पहचानने की कोई चीज नहीं है। जो आत्मा को नहीं पहचानते, वे कितनी भी ऊँची उड़ान उड़ें तो भी तालीम नहीं दे सकते। तालीम का माहिर वही हो सकता है जो आत्मा को पहचानता है। ♦♦♦

अनुक्रम

१. यदि आत्मदर्शन नहीं हुआ तो केवल अमरनाथ के दर्शन…
पहलगाँव १३ अगस्त '५९ पृष्ठ ६२९.
२. 'पदे-पदे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं नवशिक्षणस्य
श्रीनगर ५ अगस्त '५९ ,, ६३०

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन: १३९१ तार: 'सर्व-सेवा' वाराणसी

www.vinoba.in